मेहनतकशों का पैग़ाम

मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha1987@gmail.com
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 /R.N.I. No. 66400/97

शीला की जवानी का राज़ भगवा कमल विटामिन 3
समझौता ब्लास्ट के गुनहगार 4
सरकार चुननी है, चौकीदार नहीं! 5
मोदी एक मिस्टेक हैं! 6
कृष्णपाल का ड्रीम प्रोजेक्ट ध्वस्त 8

वर्ष 32 | अंक -19 | फ़रीदाबाद | 24-30 मार्च 2019 | फोन - 9999595632 | 2.50 ₹

पुलिस लूटमारी में मस्तः जनता गुंडागर्दी से त्रस्त

एसजीएम नगर में लड़कियां छेड़ने वालों का आतंक, विरोध होने पर भारी दंगा

शिकायतकर्ता को एसएचओ ने थाने में बंद करके डंडों से पीटा

फ़रीदाबाद (म.मो.) एसजीएम नगर इलाके में स्थित अग्रवाल स्कूल के पास लड़कियों को नियमित रूप से छेड़ने का सिलसिला चलता रहता है। मोटर साइकिलों पर सवार शोहदे आती-जाती लड़कियों की छाती व पुरठों पर हाथ मार कर उड़न-छू हो जाते हैं। मौका लगे तो चेन स्नैचिंग भी कर जाते हैं। दिनांक 17 मार्च को सायं करीब साढे सात बजे ऐसी ही वारदात करके भाग रहे तीन लड़कों में से दो को स्थानीय लोग़ों ने जैसे-तैसे घेर कर पकड़ लिया। ठीक-ठाक पिटाई के बाद पुलिस को बुलवाया तो वह उन्हें अपनी गाड़ी में डाल कर थाने ले गयी।

करीब आधे घंटे बाद पचासों लड़के लाठी, डंडों व लोहे की रॉडों आदि से लैस होकर उसी स्थान पर आ गये जहां उक्त दोनों की पिटाई उपरांत पुलिस कौ सौंपा गया था। इन लड़कों ने स्थानीय लोग़ों के घरों में घुस कर न केवल जी भर कर तोड़-फ़ोड़ व लूट-मार की बल्कि महिलाओं को भी खूब नोचा। इनका सबसे ज़्यादा गुस्सा लोकेश उर्फ़ हन्नी पर था। उनके अनुसार उक्त दोनों लड़कों को पकड़ने में प्रमुख भूमिका उसी ने निभाई थी। उसकी दुकान में घुस कर पूरी दुकान तहस-नहस कर दी। दुकान के बाहर खड़ी दो कारों व दो मोटरसाकिलों को आग लगा दी व एक कार को डंडों व रॉडो से तहस-नहस कर दिया। दुकान में करीब 35 हजार रुपये नकद गल्ले में पड़े थे। दंगाई जब गल्ला उठाने लगे तो हन्नी ने उनका हाथ पकड़ लिया तो उस पर डंडों से प्रहार कर गल्ला छुड़ा कर रकम ले गये।

यहां गौरतलब बात यह भी है कि घटना स्थल पर हमला करने से पूर्व दंगाई गिरोह के लड़के करीब 200 गज़ दूर स्थित मार्केट में एकत्र होने शुरू हो गये थे। संख्या पर्याप्त होने व हमला होने से पूर्व स्थानीय लोग़ों ने वहां मौजूद पीसीआर जिप्सी में बैठे पुलिसकर्मी को सूचीत भी किया था। लेकिन उसने उन लड़कों के पास जाने से यह कहते हुए मना कर दिया कि उनकी संख्या अधिक है, अतिरिक्त पुलिस बल आने पर ही वह वहां जायेगा। आस-पास के 4 थानों की पुलिस व नीली वर्दी वाली 'डरावा' पुलिस फ़िल्मी स्टाइल में जब वहां पहुंची तो गुंडा गिरोह अपनी पूरी कारस्तानी व जी भर कर लूटमार करके वहां से रफूचक्कर हो चुका था। पुलिस ने जब फ़िल्मी स्टाइल में सड़क पर डंडे फटकारते हुए स्थानीय लोग़ों से पूछा कहां है गुंडे...तो गुस्साये लाग़ों ने नौटंकीबाज़ पुलिस को जम कर गालियां सुनाई। गौरतलब है कि घटना स्थल के दो किलो मीटर दायरे में आठ पुलिस चौकियां व थाने तथा डीसीपी का कार्यालय पड़ते हैं।

अब शुरू होता है पुलिस का असली खेल

सभी लोग थाने में रपट दर्ज कराने पहुंचे। सब की ओर से हन्नी ने पुलिस को लिखित दरखास्त दी जिसके आधार पर एसआई रघुबीर सिंह ने बतौर तफ़्तीशी भारतीय दंड संहिता की धारा 148,149,323,379 बी, 435,436,452,व 506 के तहत एफ़आईआर दर्ज करने का मसौदा तैयार किया। परंतु एसएचओ हुड्डा धारा 379 बी (गल्ला छीनने) हटाने पर जोर देता रहा। रघुबीर सिंह ने बताया कि मौके पर मौजूद एसीपी सुखबीर सिंह से सलाह करके ही उसने यह धारा लगाई है। दूसरे एसआई बदन सिंह ने भी इस बात का समर्थन किया लेकिन एसएचओ मानने को तैयार ही नहीं था। इस पर दोनों एसआई अपने एसएचओ से भिड़ते दिखाई पड़े। एसएचओ ने सच्चाई जानने के नाम पर हन्नी को कमरे में बंद करके डंडे से खूब पीटा लेकिन वह कहता ही रहा कि उसका 35000 का गल्ला लूट लिया गया। इतनी ड्रामेबाज़ी के बाद कहीं जाकर आधी रात के बाद 12 बज कर 5 मिनट पर एफ़आईआर नं. 122 दर्ज की गयी। इस मामले में कोई गिरफ़्तारी करनी तो दूर जो दो बदमाश जनता ने पकड़ कर पुलिस को दिये थे वे भी छोड़ दिये।

पुलिस की नालायकी के चलते जब पचासों के गुंडागिरोह ने पूरी गुंडागर्दी करते हुए कारों व मोटरसाइकिलों में आग लगाई तो वे दो मोटरसाइकिल भी जल गये जिन पर सवार होकर सबसे पहले तीन लड़के आये थे जिनमें से एक भाग गया था व दो को पुलिस ले गयी थी। अब एसएचओ इस बात पर ज़ोर दे रहा था कि हन्नी यह स्वीकार कर ले कि उसने ही उनके मोटरसाइकिल फूंके हैं जो उसने इन्कार कर दिया। मुकदमा दर्ज करने के दौरान थाने में मौजूद पब्लिक ने एसएचओ को बताया कि किसी गुंडे ने पिस्टल आदि से फ़ायर भी किया था तो एसएचओ ने भड़कते हुए उन्हें गालियां दी और कहा कि...वह आवाज़ फ़ायर की नहीं टायर फ़टने की थी। अब कर लो बात, एसएचओ को थाने में बैठे-बैठे ही पिस्टल और टायर फ़टने की आवाज का भेद पता लग गया।

गुंडा गिरोह के तमाम लड़के पास में ही स्थित बड़खल गांव के बताये जाते हैं। चुनावी माहौल में इस तरह के लड़कों की आवश्यकता तमाम राजनीतिक दलों को रहती है। लिहाजा इनके बचाव में एक नेता इकराम खान व पुलिस की दलाली करने वाला एहसान कुरैशी मुर्गे वाला मैदान में उतर आये।। समझा जाता है कि इकराम ने पूर्व मुख्यमंत्री हुड्डा से अपने ताल्लुकात का इस्तेमाल करके एसएचओ हुड्डा पर दबाव बनाया तो कुरैशी ने नकदी का चारा परोसा।

गुंडा गिरोह की मदद के लिये पुलिस ने बनाया क्रॉस केस

हरामखोरी व रिश्वतखोरी पर उतरी पुलिस ने पहले तो महिला सुरक्षा के लिये कोई कदम नहीं उठाये और जब जनता ने खुद अपनी सुरक्षा में कदम उठाये तो पुलिस की तो मौज हो गयी, यकायक पैसे की बरसात होने लगी। गुंडों की संख्या 50 से भी अधिक होने के बावजूद एफ़आईआर में लिखे कुल 15-20 और उन पर भी धारायें हल्की करने का पूरा प्रयास किया गया।

इतने पर भी जब तसल्ली नहीं हुई तो हन्नी व उसके चाचा अन्नु आदि के विरुद्ध एक मुकदमा दर्ज कर लिया है। यह मुकदमा बड़खल निवासी उसी जावेद के बयान पर दर्ज किया गया था जिसे पब्लिक ने पीट कर पुलिस के हवाले किया था। अपने मुकदमे को मजबूत बनाने के लिये जावेद को पहले तो बीके अस्पताल में भर्ती कराया गया फ़िर सफ़दरजंग दिल्ली ले जाया गया। डॉक्टरी रिपोर्ट के अनुसार उसे कोई गंभीर चोट नहीं है। डॉक्टर ने अपनी रिपोर्ट में लिखा है कि इसके परिजनों ने अस्पताल में भी हंगामा किया और जबरन रैफ़र करा कर ले गये।

इस तरह का क्रॉस केस दर्ज करके आखिर पुलिस क्या संदेश देना चाहती है? बहन-बेटियों की सुरक्षा के लिये तो खट्टर पुलिस के पास फ़ुर्सत नहीं और जनता खुद इस काम को हाथ में ले तो कानून का उल्लंघन हो जाता है। तो क्या पब्लिक गुंडों को पकड़कर पीटने के बजाय उन्हें बैठा कर चाय-पानी पिलाये फ़िर घंटों पुलिस के आने का इंतज़ार करे। अव्वल तो पुलिस आती नहीं यदि आ भी गयी तो कार्यवाही के नाम पर अपराधियों से वसूली कर छोड़ देगी। इससे प्रोत्साहित होकर अपराधियों के हौंसले बुलंद हो जाते हैं। वरना, यदि पुलिस की नीयत ठीक हो तो किसी की क्या मजाल जो किसी बहन-बेटी की ओर बुरी नज़र भी उठा सके।

मुलाज़िमों ने बताया कि नौकरी के भय से वे अपना मुंह बंद रखने को मजबूर हैं, वरना दिखाई तो उन्हें भी सब कुछ दे रहा है। हर सट्टे वाला, बुक लगाने वाला, दाने वाला, कैसीनो वाला, चौकी, थाने से लेकर एसीपी व डीसीपी तक सीधे जुड़ा हुआ है। खास बात तो यह है कि बीते दो माह से मंथली भी दोगुणी कर दी गयी है, कहते हैं कि ऊपर से ज़्यादा डिमांड है। यह डिमांड संघ कार्यालय के निर्माण हेतु बढ़ रही है या और कोई नया हिस्सेदार पैदा हो गया है? जहां तक नये डीजीपी मनोज यादव का सवाल है, उनसे ऐसी उम्मीद नहीं की जा सकती लेकिन बावजूद इसके कुल मिला कर छवि तो उनकी भी धुमिल होती है। लड़ती तो सदैव फ़ौज ही है लेकिन नाम तो जनरल का ही होता है। इसलिये डीजीपी यादव के लिये यह जरूरी है कि वे अपनी बनी बनाई साफ़-सुथरी छवि को धूमिल होने से पहले फ़ील्ड में सक्रिय हों तथा गंदी मछलियों को चुन-चुन कर तालाब से बाहर करें।

पुलिस का आरोपःहन्नी व अन्नु शराब बेचते हैं

मोटा माल डकार कर क्रॉस केस दर्ज करने वाली पुलिस उक्त दोनों चाचा-भतीजे पर शराब बेचने का आरोप लगा रही है। यहां सवाल यह पैदा होता है कि यदि पुलिस को यह पता है कि ये लोग शराब बेचते हैं तो फ़िर पुलिस क्या कर रही है? यदि यह जुर्म है तो पुलिस इसे क्यों होने दे रही है? अन्नु का अपना एक ठेका शराब बताते हैं जिसकी शराब ठेके से कम और होम डिलिवरी (घर-घर सप्लाई) अधिक होती है। शहर में यह कोई अकेला अन्नु नहीं कर रहा बल्कि, अकेले एनआईटी क्षेत्र में दर्जनों लड़के व ठेकेदार इस धंधे में जुटे हैं। '**मज़दूर मोर्चा**' ने इस बाबत अनेकों बार लिखा है। लेकिन हर बार लिखने के बाद पुलिस की मंथली के भाव बढते रहे।

पहले तो यह मंथली चौकी इंचार्ज, एसएचओ व सीआईए वालों तक सीमित थी परंतु अब तो एसीपी व डीसीपी भी सीधे अपना हिस्सा लेने लगे हैं। नाम न छापने की शर्त पर पुलिसकर्मी बताते हैं कि जब से बड़े अफ़सरान सीधी वसूली करने लगे हैं, ठेकेदार उन्हें पीने के लिये बोतल तक देने से ना-नुकर करने लगे हैं। एक मुलाजिम ने तो यहां तक भी बताया कि पिछले हफ़्ते सीआईए बड़खल ने अन्नू की ही एक गाड़ी शराब पकड़ ली थी तो डीसीपी ने इंस्पेक्टर को डांटते हुए कहा कि तुम्हें और कोई काम नहीं, चोरों, डकैतों, बेल जम्परों को पकड़ने की बजाय शराब के पीछे पड़े रहते हो। इस पर सीआईए को मुफ़्त में, हाथ आया शिकार छोड़ना पड़ा। यहां एक अन्नु नहीं दर्जनों अन्नु, बबलू, डब्लू, पाला, टौनी, सन्नी आदि-आदि हैं जो सीधे उच्चाधिकारियों से जुड़े हैं। इस धंधे का सबसे बड़ा सरगना टंडन है। पहले तो टंडन की पहुंच केवल थाने तक ही थी लेकिन अब बताया जाता है कि वह अक्सर डीसीपी विक्रम कपूर के पास बैठा रहता है।

बड़खल पुल के नीचे बड़ा सट्टा व शराब का धंधा

फ़रीदाबाद (म.मो.) राष्ट्रीय राजमार्ग को सेक्टर 21 से जोड़ने वाले बड़खल पुल के नीचे सट्टे व शराब बिक्री का अवैध धंधा यूं तो काफ़ी अरसे से चलता आ रहा है। परन्तु बीते कुछ सप्ताहों में यहां का करोबार कुछ ज़्यादा ही बढ गया है, 'ग्राहक' शहर के दूर-दराज के हिस्सों से कुछ अधिक संख्या में आने लगे हैं। यहां धंधा चलाने वाले रामा पंजाबी व मेवला महाराजपुर के मेहरचंद गूजर हैं।

कारोबार में वृद्धि का करण यह बताया जा रहा है कि पुलिस ने अपनी मंथली का रेट एकदम से डबल कर दिया है क्योंकि 'ऊपर' अब ज़्यादा भेजना पड़ता है। बेखौफ़ धंधा चलाने के लिये धंधेबाज़ों के लिये यह जरूरी है कि वे पुलिस को बढी हुई दरों पर पेमेंट करें। नाम न छापने की शर्त पर भरोसेमंद सूत्रों ने बताया कि सेक्टर 19 की चौकी को 50 हज़ार, थाना ओल्ड को 30 हज़ार, चौकी 28 को 10 हज़ार व सीआईए सेक्टर-30 को 30 हज़ार मासिक एडवांस देना पड़ता है। सूत्र बताते हैं कि एसएचओ ओल्ड ने भी 50 की मांग रखी थी लेकिन देनदार धंधेबाज़ों ने साफ़ कहा कि चौकी और थाने (दोनों) को 50-50 हज़ार देना सम्भव नहीं। उधर चौकी वाले ने अपना रेट घटाने से साफ़ मना कर दिया यह कहते हुए कि उसे भी तो 'ऊपर' पहुंचाना है। ''हम अपना करेंगे आप अपना करो।'' यानी खुला खेल फ़रूखाबादी चल रहा है। लेकिन इस खेल में किसी एसीपी व डीसीपी की सीधी भागीदारी की कोई जानकारी अभी सामने नहीं आई है। इसके बावजूद उच्चाधिकारी अपनी ज़िम्मेदारी से, यह कह कर बच नहीं सकते कि उन्हें पता नहीं। पता करने के लिये उनके पास अनेकों साधन हैं हरेक थाने के लिये बाकायदा सिक्यूरिटी एजेंट तैनात हैं, सीआईडी वाले तथा मुखबिर खास मौजूद हैं। लेकिन इसके लिये जानकारी हासिल करने की नीयत व कार्यवाही करने का हौंसला होना जरूरी है।